आदत थी रिश्तों में शक्कर की तरह घुल-मिल जाने की
याद ही नहीं रहा की जमाना तो अब सुगर फ्री हो गया है.

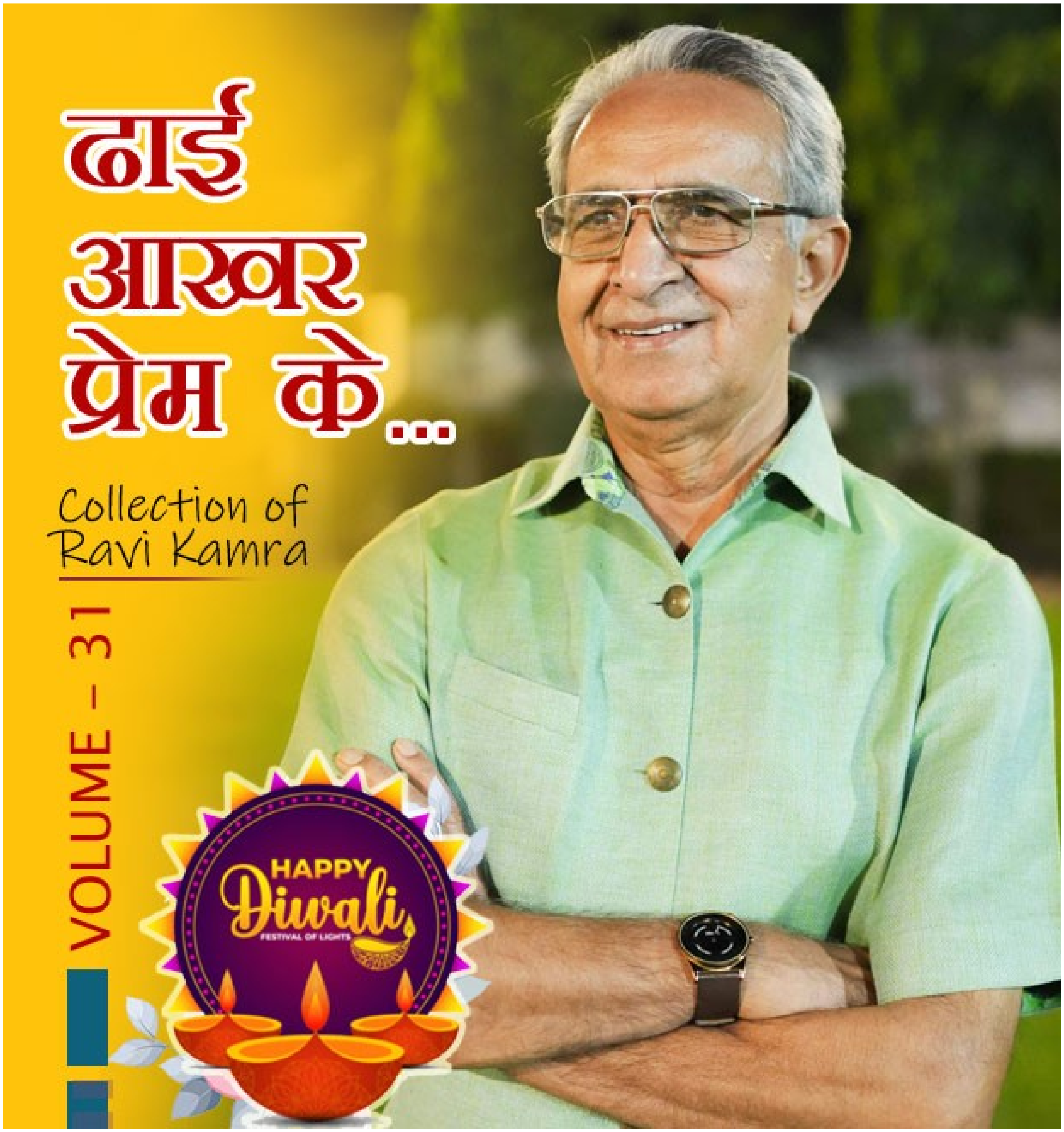

- एक दिया ऐसा भी हो ,जो
  भीतर तलक प्रकाश करे।
  आप को दीपावली की शुभकामनाएँ।

- तू जश्न बन किसी की ज़िन्दगी का,
  एक उजला दिया किसी की दिवाली का।

- प्रकाश भरो सबके जीवन में
  दिये ने यही सिखाया.

- मैं रौशिनी था मुझे फैलते ही जाना था
  वो बुझ गये जो समझते रहे चिराग मुझे

- एक दिया तुम्हारे नाम का जलता रहता है मुझमें
  ये दिवाली कभी ख़त्म नहीं होने वाली

- तुम्हारा प्यार तो सांसो में सांस लेता है
  जो होता नशा तो इक दिन उतर जाता

- छोटी छोटी बातें करके बड़े कहाँ हो जायोगे
  पतली गलियों से निकलो तो
  खुली सड़क पर आयोगे

- किसी से कोई भी उम्मीद रखना छोड़ कर देखो
  तो रिश्ते निभाना किस कदर आसान हो जाये

- धूप के एक ही मौसम ने जिन्हें तोड़ दिया
  इतने नाज़ुक भी ये रिश्ते, न बनाये होते

- ये सोच कर कोई अहदे वफ़ा करो हमसे
  हम इक वादे पर उम्रें गुज़ार देते हैं

- ज़रा सा कतरा कहीं आज उभरता है
  समुन्द्रों ही के लहजे में बात करता है

- दुःख अपना अगर हमको बताना नहीं आता
  तुम को भी तो अंदाजा लगाना नहीं आता

- आपको देख कर देखता रह गया
  क्या कहूं और कहने को क्या रह गया
  आते आते मेरा नाम सा रह गया
  उसके होटों पे कुछ कांपता रह गया
  मेरे सामने ही गया और मैं
  रास्ते की तरह देखता रह गया
  आंधियों के इरादे तो कुछ अच्छे न थे
  ये दिए कैसे जलता हुआ रह गया

- हंसी जब आये, किसी बात पर ही आती है
  उदास होने का अक्सर सबब नहीं होता

- अपने चेहरे से जो जाहिर है छुपायें कैसे
  तेरी मर्ज़ी के मुताबिक नज़र आयें कैसे

- गम और होता सुन के गर आते न वो वसीम
  अच्छा है मेरे हाल की उनको खबर नहीं

- गरीब लहरों पे पहरे बिठाये जाते हैं
  समन्दरों की तलाशी कोई नहीं लेता

- उसी को जीने का हक है जो इस ज़माने में
  इधर का लगता रहे और उधर हो जाये

  वसीम बरेलवी

- मुझे पढता कोई तो कैसे पढता
  मिरे चेहरे पे तुम लिखे हुए थे
- सफर में साथ वही दे सकते है
  जिनके ख़्वाबों में कोई रंग हो,
  वही कदम से कदम मिला सकते है
  जिनकी नज़रो में मंजिले हो,
  वही कठिन राहो पर मुस्कुरा सकते है

जिन्हे सफर से इश्क हो,
तुम अगर शौक से चले आए हो
तो लौट जाओ -----
क्योंकि हम तो हर दिन,
नई उम्मीदों की बात करते है..   अंशु हर्ष

- गैरों में बंट गया वक़्त उनका
  हमारे हिस्से में सिर्फ बहाने आये

- हमें पता है कि तुम कहीं और के मुसाफिर हो
  हमारा शहर तो बस यूँ ही रास्ते में आया था

- किसी को अधूरा पाने से बेहतर है
  उसे ख़ुशी ख़ुशी पूरा खो दो
- भीड़ में तो कई चेहरे देखे हैं
  मगर एक चेहरे के पीछे इतनी भीड़ नहीं देखी

- ये मुह्हबत है ये मर जाने से भी जाती नहीं
  तू कोई कैदी नहीं है जो रिहा हो जायेगा

- किस ज़रुरत को दबायूं किसे पूरा कर लूँ
  अपनी तनख्वाह कई बार गिनी है मैंने

- मैं तो जैसा भी हूँ सब लोग जानते हैं
  तेरे बारे में भी इक बात सुनी है मैंने

- अच्छा सुनो
  तुम्हारे घर का बरामदा
  और बरामदे में रखा सोफा
  मेज़ पर रखा अखबार
  चाय का कप
  पारले जी के बिस्कुट
  मैं...और तुम...
  और हमारी ढेर सारी बातें
  इस से अच्छी सुबह और क्या हो सकती है

- बरसों सजाते रहे किरदार को हम
  कोई बाज़ी ले गया सूरत संवार कर

- मेरे पास ख़ामोशी के सिवा कोई हल नहीं
  मैं बात करता हूँ तो बात बिगड़ जाती है

- एक ही शख्श होता है मुहब्बत के काबिल
  हर शख्श के पीछे ईमान गवाया नहीं करते

- कोई गैर क्या हामरे दिल को पामाल करता
  ये तोहफा तो बस तुझसे मंज़ूर था

- थे हम भी ज़हीन किसी ज़माने में मेरे हबीब
  बस तेरे आशिक न होते तो कमाल होते

- मैं कहानी तो नहीं हूँ की सदा रह जायूं
  मैंने किरदार निभाना है चले जाना है

- उसके अधरों को जो अधर छू लें
  मौन तृष्णा का अंत हो जाये
  अक्षरों से बना है जिस्म उसका
  उसको जो पढ़ ले संत हो जाये

- शुरू करो
  अभी शुरू करो
  जहाँ हो
  वहीँ से शुरू करो
  खामियां होंगी पर.....
  शुरू तो करो

- एक बोझ है दिल जो उठा भी नहीं सकता
  क्या बोझ है दिल पर, ये बता भी नहीं सकता

- दायम आबाद रहेगी दुनिया
  हम न होगें हमसा कोई दूसरा होगा

- के इतने हसीन चेहरे मिले
  तुम नहीं मिले
  कुछ तो तुम्हारे जैसे मिले
  तुम नहीं मिले

और बारिश, फिज़ा, तुम्हारी पसंदीदा चाय भी
मिलने के सब इशारे मिले
तुम नहीं मिले
इक दिन खुद को अपने पास बिठाया हमने
तुम नहीं मिले

- अगरचे ज़ोर हवायों ने डाल रखा है
  मगर चिराग ने लौ को सम्भाल रखा है
  हवा में नशा ही नशा फ़िज़ा में रंग ही रंग
  ये किसने पैरहन अपना उछाल रखा है
  भरी बहार में खिला है एक गुलाब
  कि जैसे तूने हथेली पे गाल रखा है

- मुहब्बत रही चार दिन ज़िंदगी में
  रहा चार दिन का असर ज़िन्दगी भर

- नीले आसमान के हृदय में
  शफ़्फ़ाफ़ बादल का टुकड़ा
  तेरी यादें ही तो है...

- किसी में कमी दिखाई दे, उसको समझाइये..!
  सभी में कमी दिखाई दे, खुद को समझाइये..!

- तुम्हारे बाद,किसी और को नहीं सोचा...
  बड़े ख़याल से रखा है...तुम्हें ख़यालों में...

- लोग ही गिन लेते है अब गुनाह दूसरों के
  फ़रिश्तों अब तुम ये काम रहने दो

- अगर बच सका, तो वही बचेगा
  हम सबमें थोड़ा-सा आदमी–
  वही थोड़ा-सा आदमी–
  जो धोखा खाता है पर प्रेम करने से नहीं चूकता।
  अशोक वाजपेयी

- वो बिक चुके थे जब हम ख़रीदने के काबिल हुए
  जमाना बीत गया ग़ालिब हमें अमीर होते होते

- गले मिलना न मिलना तो तेरी मर्ज़ी है पर
  तेरे चेहरे से लग रहा है तेरा दिल कर रहा है

- ख़ामोशी ही बात मुकम्मल करती है
  लफ़्ज़ हमारा साथ कहाँ दे पाते हैं

- केवल जिद की एक गांठ खुल जाए
  तो उलझे हुए सब रिश्ते सुलझ जाएं.....!!

- कभी कभी सफ़र-ए-ज़िंदगी से रूठ के हम
  तिरे ख़याल के साए में बैठ जाते हैं

- किताबों की अहमियत अपनी जगह है लेकिन ,
  सबक वही याद रहता है जो वक्त और लोग सिखाते हैं ...

- नुख्स निकालते हैं लोग इस कदर हममें,
  जैसे उन्हें खुदा चाहिए था और हम इंसान निकले....

- चिट्ठी के जमाने में कितना सब्र होता था
  आज तो रिप्लाई ज़रा लेट हो तो रिश्ते टूट जाते हैं...

- ख़ामोशियों में
  अक्सर मैंने कइ ख़त
  तुम्हें लिखे हैं
  हवाएँ समेट कर

ले जाती हैं
मेरे सारे ख़त
और तुम्हें सरहद पार
देकर लौटती हैं लेकर
प्रणय की सोंधी- सुगंध
और मैं फिर से
लिखती हूँ
इक नया अनुबंध

- कभी तुझसे मिलेंगे तो कहेंगे झूठ तुमसे हम
  न तेरी फ़िक्र करते हैं, न तुझे याद करते हैं !

- आदत थी रिश्तों में शक्कर की तरह घुल-मिल जाने की
  याद ही नहीं रहा की जमाना तो अब सुगर फ्री हो गया है

- "शब्द" और "नियत",
  चार लोगों में "बिठाती" भी है,
  और "उठाती" भी है..
- हरि को खोजते हो
  बस यही भ्रम है
  हरि में खो जायो
  हरि स्वयं तुम्हें खोज लेंगे

- आप वही रहिए,
  जो आप हैं..
  और आप वही कहिए,
  जो आप महसूस करते हैं..
  क्योंकि जो बुरा मानते हैं,
  वे मायने नहीं रखते और
  जो मायने रखते हैं,
  वो बुरा नहीं मानते...

- प्रेम वो बीज है ,जिसके लिए ज़रूरी नहीं कोई उपजाऊ जमीन या कोई गमला
  ना ही ज़रूरी है इसके लिए माटी का होना
  ये तो बस कहीं भी कभी भी उग आता है
  कैसी भी परिस्थिति कोई भी उम्र हो
  कोई भी सीमा इसे बाँध नहीं सकती
  बस ज़रा सा सहारा मिला और ये उग आएगा
  किसी पीपल, बरगद की तरह कहीं भी

- ख्वाहिशें कुछ कुछ यूँ भी अधूरी रही,,,
  पहले उम्र नही थी अब उम्र नहीं रही..!!

- अपनी मर्ज़ी से कहाँ अपने सफ़र के हम हैं
  रुख़ हवाओं का जिधर का है उधर के हम हैं
  पहले हर चीज़ थी अपनी मगर अब लगता है
  अपने ही घर में किसी दूसरे घर के हम हैं

- वक़्त के साथ है मिट्टी का सफ़र सदियों से
  किस को मालूम कहाँ के हैं किधर के हम हैं
  चलते रहते हैं कि चलना है मुसाफ़िर का नसीब
  सोचते रहते हैं किस राहगुज़र के हम हैं

- ये चुपके चुपके न थमने वाली हंसी तो देखो
  वो साथ हैं तो ज़रा हमारी ख़ुशी तो देखो

- "ये जो सूरज देख रहे हो,
  जुगनू-जुगनू बोया हमने!"

मनोज मुन्तशिर

- बड़ी कश्मकश में हैं
  कश्तियाँ सारी.....
    रहना भी समंदर में
  लड़ना भी समंदर से...!!

- बात करें तो दिल नहीं भरता
  न करो तो दिल नहीं लगता
  अजीब लत है तेरी

- होती नहीं वफ़ा तो, जफ़ा ही किया करो
  तुम भी तो कोई रस्म-ए,-मुहब्बत अदा करो

- हम तुम पे मर मिटे तो, ये किसका क़ुसूर है
  आईना ले के हाथ में, ख़ुद फ़ैसला करो

- बड़े ही खुशनुमा वहम थे
  की हम उनकी जिंदगी में अहम थे

- उम्र एक ऐसी चीज़ है
  जितनी बढ़ती है उतनी घटती भी है!

- उठ कर तो आ गए हैं तिरी बज़्म से मगर
  कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आए हैं

  -फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

- आज मैं खेलने नहीं आया ,
  अब ज़रा जीतकर दिखाओ मुझे ।।

- लोग इत्तेफ़ाक से सिर्फ मिलते है,
  बिछड़ते तो सब अपनी मर्जी से है.....!!

- मेरा दुश्मन परेशान है मेरी मां की दुआओं से
  वो जब भी वार करता है तो खंजर टूट जाता है

- ज़िन्दगी में ये हुनर भी आज़माना चाहिए
  जंग अपनों से हो तो हार जाना चाहिए

- बिछड़ते वक़्त अना दरमियान थी वर्ना,
  मनाना दोनों ने इक दूसरे को चाहा था

- मुद्दतें हो गई है जिंदगी से हिसाब किए हुए...!!
  क्या पता किसके दिल में अब कितने रह गए हम....!!

- जान में जान आ गई यारो
  वो किसी और से ख़फ़ा निकला
  फ़हमी बदायूनी

- 'मैं एक साथ
  दो जगहों पर मौजूद होता हूँ:
  यहाँ
  और
  जहाँ तुम हो।'

- निकल आया मैं अपने अंदर से
  अब कोई डर नहीं है बाहर से...
  जौनएलिया

- जो बांटता फिरता है जमाने में उजाले
  उस शख्स के दामन में अंधेरा भी बहुत है

- क्यों निराश होना
  प्रेम की अस्वीकृति से!
  किसी से प्यार करना
  बेहिसाब करना
  उसकी नहीं,
  तुम्हारी सुन्दरता है।

- जो जा रहा है वो समय है,
  जो पिछड़ रही है वो उम्र है,
  जो चलती रहेगी वो ज़िंदगी है
  जो नही थकेगा वो आदमी है-
  समय की चाल पर,
  उम्र के हर साल पर
  जीवन की लय-ताल पर
  गिरने-संभलने वाले को नमन
  हर चलने वाले को नमन.

-शिशिरसोमवंशी

- कुछ पल आ कर बैठ गया हूँ
  तन्हाई का जी बहलाने

- हमारे दिल में भी झाकों अगर मिले फ़ुरसत
  हम अपने चेहरे से इतने नज़र नहीं आते

- अभी राह ढ़ूंढ़ रही हूं
  उस पगडंडी की
  जहां से तुम उतर गए थे
  ढ़लान के उस तरफ ...
  फिर तो कितने बसंत आए
  महुआ कैसे झरा
  फगुनाहट की बयार में
  मेरे अधपके बाल उड़ने लगे ...
  पर मुझे वो पगडंडी ना मिली
  तलाशती है अब भी मेरी
  धुंधलाई नजर तेरी परछाईं को
  आ जाओ एक बार ...

विमला शर्मा

Subhashchandra
18

शुभ दीपावली
www.citylive.news
www.citylive.news
city LiVE
YOUR OWN LIVE BROADCASTER
Platform for sharing your thoughts